लेखकीय-वक्तव्य-रूपे राष्ट्रोपनिषत्-प्रस्तावना-शतकम्

डॉ. नारायणशास्त्री काङ्करः
राष्ट्रपतिसम्मानितो विद्वान्
संस्कृत प्रचार-प्रसार शोधपीठम्

(गताङ्कादग्रे)

गार्हस्थ्य-चिन्ता तथा, न तुदत्यस्मान् यथा राष्ट्र-चिन्ता ।
राष्ट्र - गहन - चिन्तेयं, दिने दिनेऽस्मान् प्रदहत्येव ॥8॥

हमको गृहस्थी की चिन्ता उस प्रकार व्यथित नहीं करती, जिस प्रकार राष्ट्र की चिन्ता करती है । राष्ट्र की यह गहन चिन्ता हमको दिन दिन जला ही रही है ।

We are not disturbed so much by the family problems, but with the problems of the country. This intensive concern for our country is consuming us day by day.

अहं तैः समवेदनां, प्रकटीकुर्वाणस्तानेवं पृष्टवान् ।
ब्रूत राष्ट्र-चिन्तां स्वां, कदाचित् मयोन्मूलयितुं सुशक्येत ॥9॥

उनसे संवेदना प्रकट करते हुए मैंने उनसे इस प्रकार पूछा कि बताओ अपनी राष्ट्र- चिन्ता, कदाचित् वह मेरे द्वारा उन्मूलित की जा सके ।

Seeing their compassion, I asked them if I can help them in removing the doubts about the country.

कीदृक् शोच्या दशा सा ?, किञ्चित् सुस्पष्टा तु क्रियतां तावत् ।
येनान्येऽपि मया सह, जानन्तु जना अनुबोभुवतु स्वयमपि ॥10॥

वह शोचनीय दशा कैसी है ? कुछ उसे सुस्पष्ट तो किया जाय, जिससे दूसरे लोग भी मेरे साथ उसे जानें और स्वयं भी अनुभव करें ।

What is this terrible predicament/grievous condition? Something should be done, which would also make other people know and experience, what I know and feel.

मत्प्रोत्साहनं प्राप्य, ते राष्ट्रचिन्तामेवं मां स्वकीयाम् ।
प्रकाशयितुं प्रवृत्ता, यया को न राष्ट्रभक्तः सहमतः स्यात् ? ॥11॥

मेरा प्रोत्साहन पाकर वे अपनी राष्ट्रचिन्ता इस प्रकार प्रकाशित करने में प्रवृत्त हुए , जिस राष्ट्रचिन्ता से कौन राष्ट्र-भक्त सहमत नहीं हो ?

Being motivated like this, by me, they expressed their worries about the country in which patriot would not agree with them.

अमी कथितवन्तो यत्, पूर्वं यस्माद् भारतराष्ट्रात् स्वं स्वम् ।
चरित्रं शिक्षितुमत्र, मानवा उपदिष्टा मनुमहाराजेन ॥12॥

उन्होंने कहा कि पहले जिस भारत राष्ट्र से अपना अपना चरित्र सीखने के लिये यहाँ मनुमहाराज ने मानवों को उपदेश दिया था ।

They said that in India where, before, Manu gave the instructions to the humans how to behave.

अद्य तद्राष्ट्रस्यैव, प्रतिदिशं क्षीयमाणचरित्रं दृष्ट्वा।
मनुमहाराजोऽपि दिवि, विराजमानोऽवश्यमेव दुःखी स्यात् ॥13॥

आज उस राष्ट्र के ही प्रत्येक दिशा में क्षीण हो रहे चरित्र को देख कर स्वर्ग में विराजमान मनु महाराज भी अवश्य ही दुःखी होंगे ।

today, while watching from heaven, he surely feels bad seeing how the behaviour is getting corrupted everywhere in the country. |13|

किं किं न क्षेत्रमद्य, प्रदूषितमस्ति नानाभ्रष्टाचारैः।
प्रत्यहं वृत्तपत्रे, दूरदर्शने चैते दर्श्यन्त एव ॥14॥

नाना भ्रष्टाचारों से आज कौन कौन सा क्षेत्र प्रदूषित नहीं है ? प्रतिदिन समाचारपत्र और दूरदर्शन में ये भ्रष्टाचार दिखाये ही जाते हैं ।

Which area of our lives is not polluted by corruption? We see this every day in the newspapers and on the television. |14|

(क्रमशः)